सर्वाधिकार सु...

(142)

दिल्ली विश्वविद्यालय

बी०ए० ऑनर्स हिन्दी
की
परीक्षा-योजना
तथा
पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष—१९९२
द्वितीय वर्ष—१९९३
तृतीय वर्ष—१९९४

AUTHENTICATED CO
Officer-on-Special Duty
Publication Division,
University of Delhi

शिक्षा-वर्ष १९९१-९२ में बी० ए० ऑनर्स हिन्दी पाठ्यक्रम में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए
निर्धारित पाठ्यक्रम

मूल्य : Rs 2

... COPY

बी० ए० (ऑनर्स) हिन्दी

\- (सन् १९९१ में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

१. बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी पाठ्यक्रम में कुल ८ प्रश्नपत्र निर्धारित हैं जिनमें से दो प्रथम वर्ष में, दो द्वितीय वर्ष में और चार तृतीय वर्ष में होंगे।

२. प्रत्येक प्रश्नपत्र ३ घंटे का होगा और पूर्णांक १०० होंगे।

३. पाठ्यक्रम का विभाजन इस भाँति है :

प्रथम वर्ष : १९९२

प्रथम प्रश्नपत्र	: मध्यकालीन काव्य	१०० अंक	३ घंटे
द्वितीय प्रश्नपत्र	: साहित्य-सिद्धान्त	१०० अंक	३ घंटे

द्वितीय वर्ष : १९९३

तृतीय प्रश्नपत्र	: आधुनिक कविता	१०० अंक	३ घंटे
चतुर्थ प्रश्नपत्र	: नाटक एवं कथा-साहित्य	१०० अंक	३ घंटे

तृतीय वर्ष : १९९४

पंचम प्रश्नपत्र	: निबन्ध-साहित्य तथा अन्य गद्य-विधाएँ	१०० अंक	३ घंटे
षष्ठ प्रश्नपत्र	: हिन्दी साहित्य का इतिहास	१०० अंक	३ घंटे
सप्तम प्रश्नपत्र	: हिन्दी भाषा, अनुवाद अथवा पत्रकारिता, निबन्ध-लेखन	१०० अंक	३ घंटे
अष्टम प्रश्नपत्र	: विशेष अध्ययन के लिए निम्नलिखित में से कोई एक विकल्प	१०० अंक	३ घंटे

(क) तुलसीदास, (ख) अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना, (ग) कवि जयशंकर 'प्रसाद', (घ) कहानीकार प्रेमचन्द, (च) उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा (छ) सामान्य भाषा-विज्ञान, (ज) संस्कृत भाषा और साहित्य (उन विद्यार्थियों के लिए जिन्होंने सब्सिडियरी विषय के रूप में संस्कृत न ली हो।)

पाठ्यक्रम का प्रश्नपत्रानुसार विवरण

प्रथम वर्ष—१९९२

प्रश्नपत्र—१ : मध्यकालीन काव्य १०० अंक ३ घंटे

१. कबीर—कबीर ग्रंथावली—सं० पारसनाथ तिवारी (संस्करण १९६१)

(१) सतगुर महिमा कौ अंग—१, ५, ६, १३, १४, १५, १७, १९, २६, ३४

(२) प्रेम बिरह कौ अंग—४, ७, ९, १३, १४, १६, १७, २०, २२, २३

(३) सुमिरनभजन महिमा कौ अंग—१, ५, ६, ९, १४, १५, १६, २०, २३, २६

(४) साध महिमा कौ अंग—१, २, ५, ६, ७, ९, १०, १८, २४, २७

(५) परचा कौ अंग—४, ९, ११, १३, १५, १७, २१, २३, २८, ३८

(६) पतिव्रता कौ अंग—५, ६, ७, ८, ९, ११, १२, १३, १४, १५

(७) काल कौ अंग—६, १२, १४, १६, १९, २१, २४, २८, ३४, ३६

(८) संजीवनी कौ अंग—२, ३, ६, ७, ८

(९) मन कौ अंग—१, ६, ८, ९, १२, १४, १६, १८, २०, २३

(१०) माया कौ अंग—१, २, ४, ५, ११, १३, १५, १७, २०, २२

(११) बेसास कौ अंग—१, २, ३, ५, ६, ८, ११, १३, १४, १६

२. मंझन—मधुमालती—सं० माताप्रसाद गुप्त
प्रथम १०० कड़वक

३. सूरदास—सूरसागर—ना प्र० स०, काशी, चतुर्थ सं० १

(१) विनय-भक्ति—२, ८, ३५, ४६, ६८, ८४, ८६, ९९, १०३, १३४, १४८, १५३, १७०, २०९, २२०, २९६, ३०५, ३२६, ३३७, ३६२, ३६९

(२) वात्सल्य-गोचारण—७११, ७१५, ७१७, ७२६, ७२७, ७२८, ७९५, ८११, ८३३, ९५२, ९८२, १०२९, १०६६, १०६७, १०९७, १०९९, ११०९, ११२८

(३) मुरली-स्तुति—१२३८, १२४५, १२४६, १२७१, १२७३

(४) राधाकृष्ण-मिलाप, रास, रूप, अनुराग, मान आदि से संबंधित पद १२९०, १२९१, १३०२, १३५२, १३५४, १६६६, १७५७, २३७५, २४५८, २४८३, ३०२०

(५) कृष्ण का मथुरागमन, विरह—३५८९, ३५९१, ३५९६, ३६१५, ३७७५, ३७९३, ३७९९, ३८०३, ३८०८, ३८१९, ३८२८, ३८३८, ३८५४, ३८६४, ३९०६, ३९५५, ३९८०, ४०५६, ४१०४, ४१२०, ४१३९, ४१४४, ४१७५, ४२२२, ४२२९, ४२४९, ४३०३, ४३२०, ४३३७, ४३४४, ४३५०, ४३७२, ४३८०, ४५०८।

४. तुलसीदास—कवितावली—उत्तरकांड को छोड़कर।

५. रीतिकाव्य—

रीतिकाव्य-संग्रह—सं० जगदीश गुप्त—निम्नोक्त छन्द –

भूषण—५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १६, १८, २१, २२, २४, २५, २७, २८, २९, ३०

पद्माकर—१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २८, ३०, ४५, ५६

ठाकुर—१, ५, ६, ७, ८, ९, १३, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २६, ३०, ३३, ३४।

सहायक ग्रन्थ

१. कबीर—हजारीप्रसाद द्विवेदी
२. कबीर—सं० विजयेन्द्र स्नातक
३. सूफीमत : साधना और साहित्य—रामपूजन तिवारी
४. हिन्दी सूफी-काव्य का समग्र अनुशीलन—शिवसहाय पाठक
५. हिन्दी सूफी काव्य-विमर्श—श्याममनोहर पाण्डेय
६. भारतीय साधना और सूर-साहित्य—मुंशीराम शर्मा 'सोम'
७. सूर की काव्य-कला—मनमोहन गौतम
८. गोस्वामी तुलसीदास—रामचन्द्र शुक्ल
९. तुलसी-काव्य-मीमांसा—उदयभानु सिंह
१०. तुलसी का काव्यादर्श—सुरेशचन्द्र गुप्त
११. तुलसीदास और उनका काव्य—रामदत्त भारद्वाज
१२. भूषण—विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
१३. कविवर पद्माकर और उनका युग—ब्रजनारायण सिंह
१४. रीति-स्वच्छन्द काव्यधारा—कृष्णचन्द्र वर्मा

प्रश्नपत्र—२ : साहित्य-सिद्धान्त १०० अंक ३ घंटे

खण्ड—१ (७० अंक)

१. काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन।

२. (क) रस-लक्षण।

(ख) रस के अंग (विभाव, अनुभाव, संचारी भाव—भेदों-सहित सामान्य परिचय)।

(ग) रस के भेद—शृंगार (संयोग, वियोग), वीर (सभी भेद), हास्य, करुण, रौद्र, बीभत्स, भयानक, अद्‌भुत, शान्त, वत्सल, भक्ति।

(घ) शृंगार रस का रसराजत्व, करुण रस और करुणविप्रलम्भ का अन्तर, वीर रस और रौद्र रस का अन्तर, रसाभास, भावाभास।

३. शब्द-शक्ति—

(क) अभिधा—लक्षण, वाचक शब्द और वाच्यार्थ का सम्बन्ध, वाच्यार्थ के नियामक हेतु।

(ख) लक्षणा—लक्षण, लक्षणा के प्रमुख भेद—रूढा, प्रयोजनवती—गौणी, शुद्धा (लक्षण लक्षणा, उपादान लक्षणा, सारोपा, साध्यवसाना)

(ग) व्यंजना—लक्षण, भेद—शाब्दी और आर्थी; अभिधामूला, लक्षणामूला; विशिष्टताओं के आधार पर भेद।

४. अलंकार—

(क) अनुप्रास और उसके भेद, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति।

(ख) उपमा, उपमेयोपमा, अनन्वय, रूपक और उसके भेद, स्मरण, भ्रम, सन्देह, उत्प्रेक्षा और उसके भेद, अपह्नुति और उसके भेद, प्रतीप, व्यतिरेक, तुल्ययोगिता, प्रतिवस्तूपमा, निदर्शना, दृष्टान्त, अर्थान्तर-न्यास, समासोक्ति, अन्योक्ति, व्याजस्तुति, व्याजनिन्दा, काव्यलिंग, कारणमाला, स्वभावोक्ति।

(ग) अतिशयोक्ति, अत्युक्ति, विरोध, विभावना और उसके भेद, विशेषोक्ति, स्वभावोक्ति, असंगति।

(घ) अलंकार-युग्मों का अन्तर—

लाटानुप्रास-यमक, यमक-श्लेष, उपमा-रूपक, भ्रम-संदेह, प्रतीप-व्यतिरेक, विरोध-असंगति, विभावना-विशेषोक्ति, दृष्टान्त-अर्थान्तरन्यास, अतिशयोक्ति-अत्युक्ति, समासोक्ति-अन्योक्ति।

५. गुण—लक्षण और भेद (माधुर्य, ओज, प्रसाद)।

६. दोष—लक्षण, शब्द-दोष—(क) अप्रतीति, अनुचितार्थ, निरर्थकता, अवाचकता, (ख) अर्थ-दोष—कष्टार्थ, ग्राम्यत्व, प्रसिद्ध-विरुद्ध, (ग) रस-दोष—स्वशब्दवाच्यता, विभाव-अनुभाव की कष्टकल्पना, रस की अतिवृद्धि।

७. रीति—लक्षण, भेद (वैदर्भी, गौडी, पांचाली)।

८. वृत्ति—लक्षण, भेद (मधुरा, कोमला, परुषा)।

९. छन्द—

(क) समवर्णिक—भुजंगप्रयात, इन्द्रवज्रा, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, वसंततिलका, मालिनी, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, सवैया, मत्तगयंद, दुमिल, किरीट।

(ख) दण्डक—घनाक्षरी, रूपघनाक्षरी।

(ग) सममात्रिक—उल्लाला, चौपाई, रोला, हरिगीतिका, लावनी, वीर।

(घ) अर्द्धसममात्रिक—बरवै, दोहा, सोरठा।

(ङ) विषममात्रिक—कुंडलिया, छप्पय।

खण्ड—२ (३० अंक)

साहित्य-विधाएँ—

(क) महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना।

(ख) रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, यात्रावृत्त, लघुकथा, रिपोर्ताज।

सहायक ग्रन्थ

१. काव्यशास्त्र—भगीरथ मिश्र
२. रस-मंजरी—कन्हैयालाल पोद्दार
३. सिद्धान्त और अध्ययन—गुलाबराय
४. काव्य-दर्पण—रामदहिन मिश्र
५. काव्यांग-विवेचन—सत्यदेव चौधरी
६. काव्य-सिद्धान्त—ओम्प्रकाश शास्त्री
७. अलंकार-मंजरी—कन्हैयालाल पोद्दार

८. छन्दःप्रभाकर—जगन्नाथ प्रसाद 'भानु'

९. काव्य के रूप—गुलाबराय

१०. गद्य की नयी दिशाएँ—ओम्प्रकाश सिंहल

११. लघुकथा : संरचना और शिल्प—सुरेशचन्द्र गुप्त

द्वितीय वर्ष—१९९३

प्रश्नपत्र—३ : **आधुनिक कविता** १०० अंक ३ घंटे

१. हरिऔध : प्रियप्रवास (प्रथम, पंचम और षष्ठ सर्ग)

२. मैथिलीशरण गुप्त : द्वापर

३. जयशंकर 'प्रसाद' : आँसू ('प्रसाद-ग्रन्थावली' से)

४. रामधारी सिंह 'दिनकर' : परशुराम की प्रतीक्षा

५. आधुनिक काव्य-संग्रह :

(क) माखनलाल चतुर्वेदी : वे तुम्हारे बोल, जोड़ी टूट गयी, मील का पत्थर, गीत की कोमल कड़ी, जवानी, क़ैदी और कोकिला, युगपुरुष, विद्रोही, मौन फूल है गगन पर।

(ख) भवानीप्रसाद मिश्र : फूल कमल के, गीत फ़रोश, सतपुड़ा के जंगल, बुनी हुई रस्सी, खादी का रिश्ता, दरिन्दा, ख़ूबसूरत, जाहिल मेरे बाने, श्रमशील आशीर्वाद, कला, एक दिन जाना।

(ग) त्रिलोचन शास्त्री : काठ की हाँडी, नदी : कामधेनु, हम साथी, सरसों के फूल, चेतन की डोर, उस जनपद का कवि हूँ, बापू तुम होते तो, चीर-भरा पाजामा, क्या देखा ?

सहायक ग्रन्थ

१. आधुनिक हिन्दी-काव्य : रूप और संरचना—निर्मला जैन

२. आधुनिक हिन्दी-कवियों के काव्य-सिद्धान्त—सुरेशचन्द्र गुप्त

३. गुप्त जी की काव्य-साधना—उमाकान्त गोयल

४ प्रियप्रवास में काव्य, संस्कृति और दर्शन—द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

५. प्रसाद का काव्य—प्रेमशंकर

६. पन्त, प्रसाद और मैथिलीशरण—दिनकर

७ युगचारण दिनकर—सावित्री सिन्हा

प्रश्नपत्र—४ : **नाटक एवं कथा-साहित्य** १०० अंक ३ घंटे

खंड 'क' : ५० अंक

(१) **नाटक**

१. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—मुद्राराक्षस (अनूदित)

२ शंकर शेष—एक और द्रोणाचार्य

(२) **रंग-एकांकी**

१. भुवनेश्वर प्रसाद—तांबे के कीड़े, २. जगदीशचन्द्र माथुर—ओ मेरे सपने, ३ लक्ष्मीनारायण लाल—मड़वे की भोर, ४. रामकुमार वर्मा—प्रतिशोध, ५. मोहन राकेश—अंडे के छिलके।

खंड 'ख' : ५० अंक

(३) **उपन्यास**

१. प्रेमचन्द : कर्मभूमि, २. श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारी

(४) **कहानी**

१. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी : उसने कहा था, २. प्रेमचन्द : मोटेराम शास्त्री, ३. जयशंकर 'प्रसाद' : मधुआ, ४. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' : ऐसी होली खेलो लाल, ५. भगवतीचरण वर्मा : दो बाँके, ६. अज्ञेय : शरणदाता, ७. कृष्णा सोबती : सिक्का बदल गया।

सहायक ग्रन्थ

१. भारतेन्दु का नाट्य साहित्य—वीरेन्द्र कुमार शुक्ल

२. भारतेन्दु के नाटक—भानुदेव शुक्ल

३. हिन्दी एकांकी की शिल्पविधि का विकास—सिद्धनाथ कुमार

४. प्रेमचन्द और उनका युग—रामविलास शर्मा

५. प्रेमचन्द : एक विवेचन—इन्द्रनाथ मदान

६. उपन्यासकार प्रेमचन्द—सं० सुरेशचन्द्र गुप्त

७. प्रेमचन्द के उपन्यासों का शिल्प-विधान—कमल किशोर गोयनका

८. हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा—रामदरश मिश्र

९. हिन्दी-कहानी की शिल्पविधि का विकास—लक्ष्मीनारायण लाल

१०. हिन्दी कहानी : एक अन्तरंग पहचान—रामदरश मिश्र

तृतीय वर्ष—१९९४

प्रश्नपत्र—५ : निबन्ध और अन्य गद्य-विधाएँ १०० अंक ३ घंटे

(१) **निबन्ध :**

१. बालमुकुन्द गुप्त—'शिवशम्भु के चिट्ठे' से 'बनाम लार्ड कर्जन', 'विदाई संभाषण', 'कर्जनशाही'।

२. महावीरप्रसाद द्विवेदी—कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता

३. रामचन्द्र शुक्ल—श्रद्धा और भक्ति

४. गुलाबराय—प्रभुजी मेरे औगुन चित्त न धरो

५. हजारीप्रसाद द्विवेदी—वसन्त आ गया है

६. विजयेन्द्र स्नातक—संस्कृति का स्वरूप और भारतीय संस्कृति।

(२) **संस्मरण :** महादेवी वर्मा—स्मृति की रेखाएँ।

(३) **लोक-साहित्य :** देवेन्द्र सत्यार्थी—बेला फूले आधी रात।

(४) **यात्रा-वृत्तान्त :** निर्मल वर्मा—चीड़ों पर चाँदनी।

सहायक ग्रन्थ

१. हिन्दी का गद्य-साहित्य—रामचन्द्र तिवारी

२. हिन्दी निबन्ध के आधार-स्तम्भ—हरिमोहन

३. हिन्दी रेखाचित्र : सिद्धांत और विकास—मक्खनलाल शर्मा

४. महादेवी का गद्य-साहित्य—सूर्यप्रसाद दीक्षित

प्रश्नपत्र—६ : हिन्दी साहित्य का इतिहास १०० अंक ३ घंटे

१. हिन्दी साहित्य के अभ्युदय की पूर्वपीठिका—सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ।

२. हिन्दी साहित्य के इतिहास में काल-निर्धारण का प्रश्न—आधार और दृष्टियाँ, विभिन्न काल-खंडों का नाम-निर्धारण।

३. आदिकाल की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, प्रमुख रचनाएँ और उनकी भाषा-शैली।

४. भक्तिकालीन साहित्य की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ।

५. भक्तिकालीन साहित्य की प्रमुख धाराएँ, प्रमुख रचनाकार और उनका मूल्यांकन।

६. रीतिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि—सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक।

७. रीतिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रत्येक प्रवृत्ति के प्रमुख रचनाकार और उनका योगदान।

८. आधुनिक काल का प्रारम्भ—राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ।

९. आधुनिक हिन्दी-कविता की प्रवृत्तियाँ और उनका विकास।

१०. हिन्दी-गद्य की विविध विधाओं का विकास।

सहायक ग्रन्थ

१. हिन्दी-साहित्य का इतिहास—रामचन्द्र शुक्ल

२. हिन्दी-साहित्य—हजारीप्रसाद द्विवेदी

३. हिन्दी-साहित्य का अतीत (दोनों भाग)—विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

४. हिन्दी-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास—रामकुमार वर्मा

५. हिन्दी साहित्य का इतिहास—सं० नगेन्द्र, सुरेशचन्द्र गुप्त

६. आधुनिक हिन्दी-साहित्य का इतिहास—कृष्णशंकर शुक्ल

७. हिन्दी-वाङ्मय : बीसवीं शताब्दी—सं० नगेन्द्र

प्रश्नपत्र—७ : हिन्दी भाषा, अनुवाद अथवा पत्रकारिता, निबंध-लेखन १०० अंक ३ घंटे

(क) **हिन्दी भाषा** ५० अंक

१. हिन्दी का अर्थ, भौगोलिक क्षेत्र, उपभाषाओं एवं बोलियों का सामान्य परिचय।

२. हिन्दी के विविध रूप : मानक भाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा (राजभाषा अधिनियम), राष्ट्रभाषा, हिन्दी का प्रचार-प्रसार।

३. हिन्दी का शब्द-भंडार (रचना एवं स्रोत के आधार पर), हिन्दी शब्द-भंडार का विकास।

४. हिन्दी की ध्वनियाँ और उनका वर्गीकरण—स्वर-व्यंजन, अक्षर, बलाघात।

५. हिन्दी के व्याकरणिक रूप : संज्ञा, सर्वनाम, परसर्ग, विशेषण, क्रिया (धातु, कृदंत, सहायक क्रिया, काल-रचना), अव्यय।

६. देवनागरी लिपि का विकास, हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण।

(ख) अनुवाद अथवा पत्रकारिता — २० अंक

अनुवाद

१. अनुवाद का स्वरूप
२. अनुवाद के प्रकार।
३. साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ।
४. अँगरेज़ी से हिन्दी-अनुवाद।

अथवा

पत्रकारिता

१. समाचार : अवधारणा, परिधि, प्रकार।
२. हिन्दी के प्रमुख पत्रकार।
३. समाचार एजेन्सियों की कार्यप्रणाली।
४. संपादकीय विभाग का गठन।

(ग) निबंध-लेखन — ३० अंक

सहायक ग्रन्थ

१. हिन्दी भाषा का इतिहास—धीरेन्द्र वर्मा
२. हिन्दी भाषा का विकास—देवेन्द्रनाथ शर्मा
३. हिन्दी : उद्‌भव, विकास और स्वरूप—हरदेव बाहरी
४. हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास—भोलानाथ तिवारी
५. हिन्दी भाषा : स्वरूप और विकास—कैलाशचन्द्र भाटिया, मोतीलाल चतुर्वेदी
६. हिन्दी शब्दानुशासन—किशोरीदास वाजपेयी
७. हिन्दी व्याकरण—कामताप्रसाद गुरु
८. पत्रकारिता के विविध रूप—रामचन्द्र तिवारी
९. हिन्दी पत्रकारिता : विभिन्न आयाम—सं० वेदप्रताप वैदिक
१०. अनुवाद-विज्ञान—रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, कृष्णकुमार गोस्वामी
११. अनुवाद : सिद्धान्त और व्यवहार—मंजुला दास
१२. काव्यानुवाद की समस्याएँ—भोलानाथ तिवारी, महेन्द्र चतुर्वेदी

प्रश्नपत्र—८ : विशेष अध्ययन — १०० अंक ३ घंटे

निम्नलिखित में से किसी एक साहित्यकार अथवा विषय का विशेष अध्ययन : (क) तुलसीदास, (ख) अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना, (ग) कवि जयशंकर 'प्रसाद', (घ) कहानीकार प्रेमचन्द, (च) उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा, (छ) सामान्य भाषा-विज्ञान, (ज) संस्कृत भाषा और साहित्य (केवल उन विद्यार्थियों के लिए जिन्होंने सब्सिडियरी विषय के रूप में संस्कृत नहीं ली हो।)

वर्ग (क)—तुलसीदास

पाठ्य ग्रन्थ

१. गीतावली—(बालकांड और उत्तरकांड छोड़कर)
२. दोहावली—दोहा-संख्या ५१ से अन्त तक।
३. रामचरितमानस—अयोध्याकाण्ड।
४. पार्वतीमंगल।

विशेष अध्ययन के क्षेत्र

१. तुलसीदास की युगीन पृष्ठभूमि।
२. राम-कथा की पौराणिक और लौकिक परम्पराएँ।
३. तुलसीदास की काव्य-साधना : कथ्य और शिल्प।
४. तुलसीदास के काव्य-सिद्धान्त।
५. तुलसीदास की दार्शनिक चिन्तनधारा।
६. तुलसीदास की सांस्कृतिक समन्वय-साधना।
७. निर्धारित रचनाओं के वस्तु-संयोजन और शिल्प का आलोचनापरक अध्ययन।
८. निर्धारित रचनाओं के प्रमुख व्याख्येय स्थल।

सहायक ग्रन्थ

१. गोस्वामी तुलसीदास—रामचन्द्र शुक्ल
२. तुलसी-काव्य-मीमांसा—उदयभानु सिंह
३. तुलसी-दर्शन-मीमांसा—उदयभानु सिंह
४. तुलसीदास और उनका युग—राजपति दीक्षित
५. तुलसी की कारयित्री प्रतिभा—श्रीधर सिंह
६. हिन्दी पद-परम्परा और तुलसीदास—वचनदेव कुमार
७. भक्तिकालीन कवियों के काव्य-सिद्धान्त—सुरेशचन्द्र गुप्त

वर्ग (ख)—अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना

पाठ्य ग्रन्थ

रहीम-ग्रन्थावली—सं० विद्यानिवास मिश्र तथा गोविन्द रजनीश।

विशेष अध्ययन के क्षेत्र

१. अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना की युगीन पृष्ठभूमि।
२. दरबारी संस्कृति और रहीम।

३. अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना का सांस्कृतिक-सामाजिक चिन्तन ।
४. नीतिकाव्य की परम्परा में रहीम का स्थान ।
५. रहीम की काव्य-कला ।
६. रहीम की रचनाओं के वस्तु-संयोजन और शिल्प का आलोचनापरक अध्ययन ।
७. रहीम के काव्य के प्रमुख व्याख्येय स्थल ।

सहायक ग्रन्थ

रहीम और उनका नीतिकाव्य—बालकृष्ण शर्मा 'अकिंचन'

वर्ग (ग)—कवि जयशंकर 'प्रसाद'

पाठ्य ग्रन्थ

१. प्रेम-पथिक, २. महाराणा का महत्त्व, ३. कानन कुसुम, ४. झरना, ५. लहर।

विशेष अध्ययन के क्षेत्र

१. युगीन पृष्ठभूमि में 'प्रसाद' ।
२. 'प्रसाद' का गीतिकाव्य ।
३. छायावादी काव्य आन्दोलन में 'प्रसाद' की भूमिका ।
४. 'प्रसाद' की सौन्दर्य-चेतना ।
५. 'प्रसाद' के काव्य में संस्कृति और दर्शन ।
६. प्रसाद के काव्य में वस्तु-संयोजन और शिल्प का आलोचनापरक अध्ययन ।
७. 'प्रसाद' के काव्य-सिद्धान्त
८. निर्धारित रचनाओं के प्रमुख व्याख्येय स्थल ।

सहायक ग्रन्थ

१. जयशंकर 'प्रसाद'—नन्ददुलारे वाजपेयी
२. आँसू तथा अन्य कविताएँ—विनयमोहन शर्मा
३. जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला—रामेश्वर लाल खंडेलवाल
४. 'प्रसाद' का काव्य—प्रेमशंकर
५. महाकवि 'प्रसाद'—विजयेन्द्र स्नातक
६. जयशंकर 'प्रसाद'—रमेशचन्द्र शाह
७. 'प्रसाद' के काव्य और नाटक : दार्शनिक स्रोत—सुरेन्द्रनाथ सिंह
८. छायावाद की काव्य-भाषा—रमेशचन्द्र गुप्त

वर्ग (घ)—कहानीकार प्रेमचन्द

पाठ्यक्रम में निर्धारित कहानियाँ

१. रानी सारंधा, २. मर्यादा की वेदी, ३. सती, ४. राजा हरदौल, ५. फातिहा, ६. परीक्षा, ७. बड़े घर की बेटी, ८. नमक का दारोग़ा, ९. घमंड का पुतला, १०. एक्ट्रेस, ११. दो बहनें, १२. गुप्त धन, १३. गरीब की हाय, १४. आत्माराम, १५. शान्ति, १६. नैराश्य-लीला, १७. खून-सफ़ेद, १८. शंखनाद, १९. क्रिकेट मैच, २०. बेटों वाली विधवा, २१. घर जमाई, २२. कायर, २३. कजाकी, २४. सौत, २५. सद्गति, २६. ब्रह्म का स्वांग, २७. रामलीला, २८. सुजान भगत, २९. शतरंज के खिलाड़ी, ३०. पूस की रात, ३१. दो बैलों की कथा, ३२. सवा सेर गेहूँ, ३३. बड़े भाई साहब, ३४. मैकू, ३५. रँगीले बाबू, ३६. होली का उपहार, ३७. सत्याग्रह, ३८. क़ैदी, ३९. दो भाई, ४०. बैर का अन्त ।

विशेष अध्ययन के क्षेत्र

१. प्रेमचंद की युगीन पृष्ठभूमि ।
२. प्रेमचंद-पूर्व कहानी ।
३. प्रेमचंद की कहानियों में व्यक्त जीवन-दर्शन और भारतीय संस्कृति ।
४. प्रेमचंद और उनके समकालीन कहानीकार ।
५. आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद के संदर्भ में प्रेमचंद की कहानियों का वस्तु-संयोजन ।
६. निर्धारित कहानियों के कथ्य और शिल्प का आलोचनात्मक अध्ययन ।
७. निर्धारित कहानियों के प्रमुख व्याख्येय स्थल ।

सहायक ग्रन्थ

१. प्रेमचंद और उनका युग—रामविलास शर्मा
२. प्रेमचंद : एक विवेचन—इन्द्रनाथ मदान
३. प्रेमचंद—सं० सत्येन्द्र
४. प्रेमचंद का कहानी-शिल्प—गौतम सचदेव
५. प्रेमचंद-परिचर्चा—सं० कल्याणमल लोढ़ा
६. प्रेमचंद : व्यक्ति और साहित्यकार—मन्मथनाथ गुप्त

वर्ग (घ)—उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा

पाठ्य ग्रन्थ

१. गढ़कुंडार, २. झाँसी की रानी, ३. मृगनयनी ।

विशेष अध्ययन के क्षेत्र

१. निर्धारित रचनाओं के प्रमुख व्याख्येय स्थल ।

२. निर्धारित रचनाओं के वस्तु-संयोजन और शिल्प का आलोचनात्मक अध्ययन ।

३. वृन्दावनलाल वर्मा की उपन्यास-कला ।

४. वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास, रोमांस, कल्पना और यथार्थ की भूमिकाएँ ।

५. वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में समकालीन युगबोध ।

६. हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा और वृन्दावनलाल वर्मा ।

७. वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में प्रतिफलित भारतीय संस्कृति और जीवन-दर्शन ।

सहायक ग्रन्थ

१. उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा—शशिभूषण सिंहल

२. हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास : प्रतिमान एवं विकासेतिहास—सत्यपाल चुघ ।

वर्ग (छ)—सामान्य भाषाविज्ञान

१. भाषा : परिभाषा एवं प्रमुख अभिलक्षण ।

२. भाषाविज्ञान : स्वरूप एवं प्रकार (वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, अनुप्रयुक्त) ।

३. भाषा और बोली का अंतर, भाषा के विविध रूप ।

४. भाषा के विभिन्न पक्ष : ध्वनि, रूप, वाक्य, अर्थ ।

५. ध्वनिविज्ञान : ध्वनियों का वर्गीकरण, ध्वनि-परिवर्तन—कारण और दिशाएँ, स्वनिम, अक्षर, बलाघात, अनुतान ।

६. रूपविज्ञान : शब्द और पद, रूपिम, उपसर्ग, प्रत्यय, पक्ष, वाच्य, वृत्ति, काल ।

७. वाक्य-विज्ञान : वाक्य की परिभाषा, वाक्य की आवश्यकताएँ, वाक्य के अंग, वाक्य-प्रकार, वाक्य-रचना ।

८. अर्थ-विज्ञान : अर्थ के विभिन्न रूप, अर्थ-परिवर्तन—कारण और दिशाएँ ।

सहायक ग्रन्थ

१. भाषाविज्ञान की भूमिका—देवेन्द्रनाथ शर्मा

२. भाषाविज्ञान—भोलानाथ तिवारी

३. भाषाशास्त्र की रूपरेखा—उदयनारायण तिवारी

४. भाषा (हिन्दी-अनुवाद)—लैनर्ड ब्लूमफ़ील्ड

वर्ग (ज)—संस्कृत भाषा और साहित्य

१. **पाठ्य ग्रन्थ** (५० अंक)

(१) व्यास : गीता (द्वितीय अध्याय)

(२) कालिदास : अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक)

(३) पंडितराज जगन्नाथ : भामिनी विलास (प्रास्ताविक विलास)

(४) चारुदेव शास्त्री : श्री गान्धिचरितम् (द्वितीय परिच्छेद)

(एक गद्य-अवतरण का हिन्दी में अर्थ, दो पद्य-अवतरणों की हिन्दी में व्याख्या, पाठों पर आधारित दो प्रश्न ।)

२. संस्कृत-साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय (२० अंक)
(प्रमुख रचनाएँ और प्रवृत्तियाँ)

३. **व्याकरण** (३० अंक)

(१) सन्धि-प्रकरण : स्वर सन्धि और व्यंजन सन्धियों में प्रमुख सन्धियों का ज्ञान ।

(२) विभक्तियों (कारकों) के प्रयोग का ज्ञान : वाक्यों में अशुद्धि-शोधन ।

(३) क्तवतु, शतृ, शानच्, णमुल, अनीयर, क्तिन् प्रत्ययों का ज्ञान ।

(४) निम्नलिखित धातुओं के परस्मैपदीय लट्, लोट्, लङ्, विधि-लिङ्, और लृट् लकारों का ज्ञान––

भू, अस्, दा, गम्, कृ, हन्, चुर्, पिब् ।

सहायक ग्रन्थ

१. संस्कृत साहित्य का इतिहास––बलदेव उपाध्याय

२. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा––चन्द्रशेखर पाण्डेय

D.U.P. 318—6-90—500 + 50.